Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा' में संकलित 'सुखशयितप्रच्छिका' की सामाजिक समस्याएं एवं समाधान

रंजीत कुमार वर्मा *

* शोधार्थी (संस्कृत) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आधुनिक समाज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि नवयुवक शिक्षित होते हुए भी बेरोजगारी का दंश झेलता है फिर भी वह समाज में रहकर विभिन्न प्रकार की सामाजिक यातनाओं को सहने करते हुए, और लोगों के द्वारा कहे गये ताने आदि को सुनकर बेरोजगार व्यक्ति व्यथित हो जाता है जिस कारण से वह समाज में रहकर सामाजिक कार्यों को अच्छे ढ़ंग से करने में सक्षम नहीं हो पाता है फिर भी वह समाज में रहकर अपने आप को असहाय, किंकर्तव्यविमूढ़ एवं बेकार समझने लगता है इसी को आधार बनाकर आधुनिक कथाकार अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इक्षुगन्धा कथा संग्रह में शिक्षित नव युवक की सामाजिक परिस्थितियों का साहित्य के रूप में विभिन्न विधाओं में वर्णन किया है जिनके रूप इस प्रकार है– कथा, नाटक, काव्य, एकांकी, महाकाव्य आदि में सामाजिक समस्याओं का वर्णन वर्तमान समाज में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार सामाजिक समस्याओं से ओत–प्रोत संस्कृत की आधुनिक कथाओं में समाज का बिम्ब – प्रतिबिम्ब रूप दिखायी दे रहा है।

आधुनिक कथाकार अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने बेरोजगारी से पीड़ित व्यक्तियों को कथा का आधार बनाकर समाज में उनकी विषम परिस्थितियों को दिखाने का प्रयास किया है जिसमें अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित इक्षुगन्धा कथा संग्रह में संकलित सुखशयितप्रच्छिका की सामाजिक समस्या एवं समाधान को लेकर समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसमें कथा नायक के रूप में समीर शुक्ला निवासी गोण्डा जिला की कुँवानी नदी के समीप गाँव का रहने वाला एक नवयुवक है जिसके पिता की मृत्यु बचपन में हो गयी थी। वह बेराजगारी, असहाय होकर रोजगार के लिये इलाहाबाद शहर में आता है किन्तु कुछ समय के बाद वह दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है जिससे वह अस्पताल में पहुँचाया जाता है यह जानकर समीर शुक्ला स्वयं अपनी माता के विषय में सोचता है कि इस घटना की सूचना माँ को दे या न दे क्योंकि समीर शुक्ला पहले से ही बेरोजगारी की समस्या से ग्रसित था। जिस समस्या का समाधान एक वृद्ध रिटायर्ड फौजी एवं उनकी अत्यन्त सुन्दरी नतिनी शुभदा के द्वारा होती है जो इस कथा में नायिका के रूप में दिखलायी गयी है अंत में समीर और शुभदा का विवाह कर शिक्षित नवयुवक की बेरोजगारी को समाप्त करके समाज के सामने समाधान प्रस्तुत किया गया है।

शब्द कुंजी – बेरोजगारी, सामाजिक यातनाएं, असहाय किंकर्तव्यविमूढ़, विषम परिस्थितियाँ, सुखशयितप्रच्छिका, दुर्घटनाग्रस्त, रिटायर्ड फौजी, व्यथित, ओत–प्रोत।

प्रस्तावना – आधुनिक कथाकार अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वरा रचित 'इक्षुगन्धा' कथा संग्रह में संकलित 'सुखशयितप्रच्छिका' की सामाजिक समस्या एवं समाधान का बिम्ब–प्रतिबिम्ब रूप समाज के सामने दिखाया गया है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के विभिन्न उतार–चढ़ाव एवं बदलते सामाजिक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। इन सभी सामाजिक कथाओं में व्यक्ति एवं समाज का प्रत्येक पक्ष सामने दृष्टिगोचर होता है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, विसंगतियों, कुरीतियों और समाज के बदलते स्वरूपों का सजीव चित्रण कथाओं में भली–भाँति दिखाया गया है जिसका सुखशयितप्रच्छिका कथा में निरूपण इस प्रकार है–

सामाजिक समस्या – डॉ. राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित 'सुखशयितप्रच्छिका' कथा में नायक स्वरूप समीर शुक्ला की बेरोजगारी समस्या को सामाजिक समस्या के रूप में शिक्षित नवयुवक की व्यथा को समाज के सामने दिखाने का प्रयास किया है

यथा– पितामह! मय जीवनसंविधानकमपि विलक्षणमेव वर्तते।
गोनर्दनाम्नि (गोण्डा) जनपदे कुआनोनद्यास्तटे गृहीतजन्माहम्
प्रतिवेशिवैरात् सन्तप्तो बहुविधळच शतितो धर्मभीरूर्मे
पिता हृदयरोगेणाकालमेव पळचत्वं गत:। उच्चशिक्षार्जनार्थ
प्रयाग विश्वविद्यालयं प्रविष्ट:। एम0एम0 परीक्षां
प्रथम श्रेण्यां समुत्तीर्य शोधकार्यलालसेनापि
मया मातृकष्टमसहमानेन जीविकार्थ प्रयतितम्।
इदानी न वर्तते कापि छात्रवृत्ति:। न च किमप्यपरं
साधनम्। वराकी जननी तु सर्वथाऽकिळचना।[1]

अर्थात् दादा जी! मेरे जीवन की कहानी भी विलक्षण ही है। गोंडा (उ0प्र0) नाम के जिले में कुआँनो नदी के किनारे मेरा जन्म हुआ। पड़ोसियों की शत्रुता से संतप्त तथा उनके द्वारा तरह–तरह से सताए गए धर्मभीरु मेरे पिता, अवसर से पहले ही हृदयरोग से पीड़ित होकर स्वर्गवासी हो गए। माँ के प्रयत्नों तथा कुछ विश्वस्त मनिषियों की सहायता से मैं उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में दाखिल हुआ। एम.ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण कर शोधकार्य की लालसा होने के बावजूद मैंने माँ के कष्टों को न सह पाने के कारण, नौकरी पाने का प्रयत्न किया। इस समय तो कोई छात्रवृत्ति भी नहीं मिल रही और कोई दूसरा आय का साधन भी नहीं। बेचारी माँ तो एकदम अकिंचन हो उठी है।

शिक्षित बेराजगार नवयुवक समीर जीविकोपार्जन की खोज में वह एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में दिनभर इधर-उधर भटकता रहता है तथा अचानक एकदिन दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है और समीर की बेरोजगारी, आर्थिकतंगी को कथाकार ने इस प्रकार चित्रित किया है।

यथा- अस्मिन्नेव सन्दर्भे लेखानियन्त्रक कार्यालय समक्षंराजमार्गम पारयन् वाष्पयानेन दृढमाहत:। भगवत्कृपयैव जीवितोऽस्मि। अन्यथा मातुर्मे जीवित समाधि : स्यात्।[2]

अर्थात् बस इसी सन्दर्भ में ए0जी0 ऑफिस के सामने सड़क पार करता हुआ मैं ट्रक से बुरी तरह टकरा गया। परमेश्वर की कृपा से ही जीवित हूँ। अन्यथा मेरी माँ तो जीते-जी ही मर जाती।

यथा- भवादृशं पूज्यचरणं सम्प्राप्य इदानीमनुभावि यत् विजयेतेतरां भारतमिदानीमपि! साम्प्रतं भवानेव समादिशतु। किं सूचनयाऽनया मातृपीडने पापं न भविष्यति? अल ता वराकी पृथां सन्ताप्य ? कतिपयैरहोभि: स्वास्थ्यं सम्प्राप्यैव तामुपगमिष्यामि।[3]

अर्थात् आप सरीखे पूज्यचरण को प्राप्त कर इस समय अनुभव कर रहा हूँ कि आज भी भारत देश सर्वोत्कृष्ट ही है। अब आप ही राय दे कि क्या इस दुर्घटना की सूचना से माँ को व्यथित करने से पाप नहीं होगा? उस बेचारी कुंती को संतप्त करना व्यर्थ है। कुछ दिनों में भला-चंगा होकर ही उससे मिलने जाऊँगा।

सामाजिक समस्या का समाधान - आधुनिक कथाकार राजेन्द्र मिश्र ने समाज में व्याप्त शिक्षित बेराजगार नवयुवक की सामाजिक समस्या का समाधान करते हुये अपने कथा संग्रह के अंतर्गत वर्णित 'सुखशायितप्रच्छिकां' कथा के नायक रूप में समीर शुक्ला का विवाह एक रिटार्यड फौजी की नतिनी शुभदा के साथ कराकर समाज में शिक्षित बेरोजगार नवयुवक की समाजिक समस्या का समाधान करने का प्रयास किया गया है।

यथा- कथयत्येव मयि पितामहो मामाकृष्य स्वबाहुपाशेडकरोत्। रसना में जड़तीभूता। अलानि च स्नेहदुर्ललितानि शिथिलितानि। पितामहो मां बहुश: समुपलाल्य प्रचुम्ब्य च सस्नेहवोचत्- वत्ससमीर! तव दुर्घटनाऽपि मृत्कृते सुघटनैव। भाग्येनैव प्राप्तोऽसि पुत्रक! मम कृते तु यथा शुभदा तथैव समीर! त्वमपि![4]

अर्थात् ऐसा कहते हुए दादा जी ने मुझे खींचकर अपनी बांहों में भर लिया। मेरी जीभ जड़ हो उठी। स्नेह में दुलारे गए मेरे अंग प्रत्यंग शिथिल हो उठे। दादा जी मुझे बार-बार दुलार-पुचकार कर चूम कर स्नेहपूर्वक बोले- बेटे समीर! तुम्हारी दुर्घटना भी मेरे लिए सुंदर घटना ही है। बेटे! भाग्य से ही तुम प्राप्त हुए हो। समीर! मेरे लिए तो जैसी शुभदा है वैसे ही तुम भी हो।

यथा- दृष्टमावाभ्याम् यत् शुभदाऽस्मत्पृष्ठभागे रूदती तिष्ठति। न जाने कदा निभृतपदैरागत्यं मृद्व्यथाकथां श्रृण्वती स्थिताऽऽसीत्। निस्सारोऽभून्मम पीडाभार:। यन्निवेदनार्थं प्रयतितव्यमासीत् तत्सहजमेव मुखाद्विनिस्सृतं शुभदया च सर्वं श्रुतम्।[5]

अर्थात् हम दोनों ने देखा कि शुभदा हम दोनों के पीठ-पीछे रोती हुई खड़ी है। नि:शब्द गति से आकर न जाने कब से मेरी व्यथा कथा को सुन रही थी। वह मेरी पीड़ा का बोझ हल्का हो गया। जो कुछ बताने के लिए प्रयत्न करना था वह सब सहज रूप में ही मुँह से निकल गया और शुभदा ने यह सुन भी लिया।

यथा- पितामहसङ्केस्तु विज्ञात एवं मया। स मां जामातृभावेन गृह्णाति इत्यपि सुस्पष्टमधुना तद्वचोभि:। परन्तु शुभदा कथं मन्यत इति सम्प्रत्यपि ज्ञेयमासीत्। यद्यपि रोदनं तस्या न प्रणय सम्बन्ध बाधकमुताहो साधकमेव।[6]

अर्थात् दादा जी का संकेत तो मैं समझ ही चुका था। वह मुझे जामाता के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। उनकी बातों से अब यह भी स्पष्ट हो गया है परन्तु शुभदा के मन में क्या है? यह भी मुझे जानना था। फिर भी उसका रोना मेरे साथ प्रणय सम्बन्ध का बाधक न बन सका। इस प्रकार अन्त में नायक समीर एवं नायिका शुभदा का विवाह हो जाता है।

निष्कर्ष - अन्तत: कथाकार राजेन्द्र मिश्र ने सुखशयितप्रच्छिका कथा में असहाय तथा बेकार शिक्षिक युवक समीर शुक्ला की सामाजिक परिस्थितियों को कथा साहित्य में सर्वोपरि स्थान दिया है। समाज की प्रतिकूल परिस्थितियों के दोनों पहलुओं सामाजिक समस्या एवं सामाजिक समाधान का ज्वलन्त उदाहरण 'बेरोजगारी' जो वर्तमान समय में प्रत्येक युवक की व्यथा है तथा इस कथा में समीर और शुभदा के प्रणय-बन्धन के द्वारा कथाकार समाज के सामने सामाजिक समस्या का समाधान करने में सफल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखशयितप्रच्छिका, पृष्ठ-23
2. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखशयितप्रच्छिका, पृष्ठ-23
3. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखशयितप्रच्छिका, पृष्ठ-23
4. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखशयितप्रच्छिका, पृष्ठ-23
5. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखसायितप्रच्छिका, पृष्ठ-23
6. कथाकार डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कथा संग्रह 'इक्षुगन्धा', कथा सुखशयितप्रच्छिका, पृष्ठ-23-24

****